सफलता की कहानियां

जिला किन्नौर-हिमाचल प्रदेश

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

हिमाचल सरकार

मार्गदर्शन

डा० अजय शर्मा (भा.प्र.से.)
सचिव कृषि

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
राज्य परियोजना निदेशक
एवं विशेष सचिव (वित्त)

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

तकनीकी सहयोग

डॉ० मोहिन्दर सिंह भवानी
प्रधान वैज्ञानिक, कृषि अर्थशास्त्र

इकबाल ठाकुर
मीडिया सलाहकार

डॉ० मोहिन्दर सिंह भवानी
उप-निदेशक, कृषि

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त हुई है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 8,000 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों एवं अन्य खेती रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा॰ प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु एक व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। किन्नौर जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' अभियान से जुड़े कृषि अधिकारियों और किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

–जयराम ठाकुर

हिमाचल प्रदेश सरकार

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वाकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान–बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले साढ़े 3 वर्षों में लगभग 1,53,643 किसान–बागवानों का 3,563 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि–भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान–बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई'(SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट–बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल–जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय प्रयास है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान–बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान–बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

– वीरेन्द्र कंवर

हिमाचल प्रदेश सरकार

सचिव कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

सतत् एवं स्थाई कृषि विकास में प्राकृतिक कृषि का अपना स्थान है। इस क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश का उल्लेख होना हमारे लिए गर्व की बात है। प्रदेश के किसान – बागवान न केवल मेहनती एवं प्रगतिशील हैं, बल्कि वर्तमान खेती व्यवस्था से जुड़े विषयों मिट्टी का स्वास्थ्य, धरती में पानी की उपलब्धता, पर्यावरण संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य जैसे ज्वलंत मुद्दों के प्रति संवेदनशील भी हैं। यह आवश्यक है क्योंकि खेती – बागवानी में बढ़ते रसायनों के प्रयोग से साल – दर – साल बढ़ती खेती की लागत तथा अस्थिर होता उत्पादन एक चिंता का विषय बनता जा रहा है।

कृषि को किसान के लिए हितकारी बनाने का लक्ष्य लेकर प्रदेश सरकार ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के तहत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है। इस विधि की निरंतर सफलता ने यह सिद्ध किया है कि किसानों की आय बढ़ाने और उनके दीर्घकालिक कल्याण के लिए यह विधि एक सशक्त विकल्प है। वर्तमान में उपलब्ध आंकड़ों से यह प्रतीत हो रहा है कि स्थानीय संसाधनों का प्रयोग करते हुए किसान – बागवान कम खेती लागत और कम पानी का प्रयोग करके भूमि की उर्वरता को लगातार बरकरार रखते हुए अच्छी उपज ले रहे हैं।

प्रदेश के मा० मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन एवं मा० कृषि एवं पशुपालन मंत्री जी के नेतृत्व में सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के कार्यान्वयन व निगरानी के साथ तय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गम्भीर एवं सार्थक प्रयास किए हैं। आंकड़ों के अनुसार प्रदेश भर में 1,53,643 किसानों ने इस विधि को आंशिक या पूर्ण भूमि पर अपनाकर इस नई पहल की सार्थकता को स्थापित किया है।

जून 2018 में योजना के प्रारंभ होने के बाद से प्रदेश भर से किसानों की सफलता की कहानियां प्राप्त हो रही हैं। मुझे आशा है कि सफलता की कहानियों का यह सिलसिला लक्षित समय में प्रदेश को रसायनमुक्त करेगा। किन्नौर की इन कहानियों का प्रकाशन विशेष प्रसन्नता का विषय है। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस संकलन एवं प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

डॉ० अजय शर्मा

राज्य परियोजना निदेशक
एवं विशेष सचिव (वित्त)
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती–बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रसायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक खेती' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले साढ़े 3 वर्ष के छोटे से अन्तराल में 1,53,643 से अधिक किसान–बागवानों ने अपने–2 खेत–बागीचों में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

किन्नौर जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

–राकेश कंवर

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 8,000 करोड़ की फल–सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि–बागवानी लागत, किसान–बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल–सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक–फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल–सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक–फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती–बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश को रसायनमुक्त राज्य बनाने के लिए पूर्व राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत जी की ओर से 2016 से ही प्रयास शुरू हो गये थे। तत्पश्चात हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' एवं इनके दीर्घकालीन कल्याण हेतू फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान–बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारक संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 1,64,756 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं और 1,53,643 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

–प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 81 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 36,15 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

जिला किन्नौर - परिदृश्य

किन्नौर हिमाचल प्रदेश के पूर्वोत्तर में चीन की सीमा से सटा हुआ जिला है। ऊँचे – ऊँचे पहाड़ों, संकरी घाटियों और बेहद शुष्क मौसम वाला यह जिला अपने सेब और सूखे मेवों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। इस जिला का कुल क्षेत्रफल 6,401 वर्ग किलोमीटर है। प्रदेश की राजधानी से 235 किलोमीटर दूर स्थित यह जिला मुख्यतः 3 भागों – ऊपरी, मध्य और निचले किन्नौर में बंटा हुआ है। सतलुज, स्पीति और बास्पा नदियां यहां के लोगों के जीवन और खेती – बागवानी का आधार हैं। अपनी नौसर्गिक सुन्दरता के लिए विख्यात इस जिले में बहुत कम बारिश होती है जिसकी वजह से यहां खेती – बागवानी करना एक चुनौती है। ऐसे में प्राकृतिक खेती यहां के किसान – बागवानों के लिए आशा की एक नई किरण बनकर उभरी है।

सेब, बादाम, चिलगोजा, अंगूर, अखरोट, ओगला, फाफड़ा, मटर और राजमाश यहां की प्रमुख फसलें हैं। वर्ष 2018 से हि0 प्र0 सरकार द्वारा चलाए जा रही महत्वपूर्ण योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अर्न्तगत जिला किन्नौर में विभिन्न गतिविधियां चलाई जा रही हैं जिसका विवरण नीचे दिया गया है।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
10,757

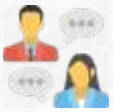

भाषा एवं बोलियां
हिन्दी, भोटी

आबादी
84,121

कुल क्षेत्रफल
6,24,199 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
10,603 हैक्टेयर

वर्ष 2021-22 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
2,500

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खण्डवार स्थिति

क्रम सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान (30 नवम्बर 2021 तक)	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान (30 नवम्बर 2021 तक)	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमी (हैक्टेयर में)
1	पूह	2,516	927	683	70.12
2	कल्पा	2,991	1,006	617	74.80
3	निचार	5,250	985	603	42.68
कुल योग		10,757	2,918	1,903	187.60

सफल प्राकृतिक खेती किसान

- जीत नेगी, गांव व पंचायत – मूरंग, विकास खण्ड – पूह
- आत्मा राम, गांव – रंगदा – खो, पंचायत – शुदारंग, विकास खण्ड – कल्पा
- गंगा सरनी विष्ट, गांव व पंचायत – किल्बा, विकास खण्ड – कल्पा
- सुशील सागर, गांव व पंचायत – छितकुल, विकास खण्ड – कल्पा
- छेतन पल्ज़र, गांव – थोपन, पंचायत – रारंग, विकास खण्ड – पूह
- यशपाल सिंह, गांव – बोनिगं – सोरिंग, पंचायत – थेमगारंग, विकास खण्ड – कल्पा
- गौरव कुमार, गांव व पंचायत – शलखर, विकास खण्ड – पूह
- रामसेन राही, गांव व पंचायत – लिप्पा, विकास खण्ड – पूह
- थानापति महिला समहू, गांव व पंचायत – रिस्पा, विकास खण्ड – पूह
- चेत राम, गांव – बारो, पंचायत – सुंगरा , विकास खण्ड – निचार
- शेखर राज, गांव व पंचायत – चांगो, विकास खण्ड – पूह
- मनमोहन नेगी, गांव व पंचायत – कोठी, विकास खण्ड – कल्पा
- इंद्र प्रकाश, गांव व पंचायत – ग्याबोंग, विकास खण्ड – पहू
- हितेंदर मोहन, गांव व पंचायत – कोठी, विकास खण्ड – कल्पा
- महेश्वर महिला समूह, गांव व पंचायत – चगांव, विकास खण्ड – निचार

बेहतर उत्पाद दे रहा आत्मविश्वास, बागीचे से तय कर रहे हैं दाम

जीत नेगी
मो.- 98163-64601

जब आपके उत्पाद की गुणवत्ता सही हो तो आप आत्मविश्वास से भरे होते हैं और बेहतर तरीके से मोल–भाव करके बाजार में अपना उत्पाद अच्छे दाम में बेच सकते हैं। यह कहना है मूरंग गांव के प्रगतिशील बागवान जीत नेगी का जो 20 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

एक दशक तक जैविक खेती करने के बाद प्राकृतिक खेती की तरफ मुड़े जीत नेगी ने बताया कि अगस्त 2018 में रोहडू में इस खेती पर लगे एक शिविर ने उनका खेती–बागवानी के प्रति नजरिया बदल दिया। पद्मश्री सुभाष पालेकर जी द्वारा बताया प्राकृतिक खेती का सिद्धांत मन को भा गया। योजना की शुरूआत के बाद उन्होंने 2 दिन के प्रशिक्षण शिविर में इस खेती की बारीकियों को जाना और खेत–बागीचे में आदान बनाकर इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

जीत नेगी ने कहा कि शुरूआत में लोगों ने कहा कि नई विधि को अपनाने से फसल का नुकसान होगा लेकिन मुझे पहले साल में ही अच्छे परिणाम मिले। अपने उत्पाद को लेकर वह वर्ल्ड ऑर्गेनिक एक्सपो 2019 में भी गए। इस प्रदर्शनी में लोगों ने उनके उत्पाद को सराहा। प्रदर्शनी के दौरान जीत नेगी ने 200 प्रति किलो की दर से काला आलू और 325 रूपए प्रति किलो की दर से सेब भी बेचा। एक्सपो में भाग लेने के बाद इस बागवान ने प्राकृतिक खेती के अधीन दायरा बढ़ा दिया। वर्तमान में जीत नेगी दो बागीचों में 2500 सेब के पौधों पर प्राकृतिक आदानों का प्रयोग कर रहे हैं जिनमें फलदार पौधों की संख्या 1200 के करीब है।

हर साल औसतन 1500 पेटी सेब उत्पादन करने वाले जीत को बाजार के लिए ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी। किसानों के एक समूह से जुड़े होने के चलते उन्हें आसानी से बाजार मिल गया। जीत ने बताया कि उन्होंने राजस्थान के जयपुर और उदयपुर से लेकर दक्षिण भारत में बैंगलौर तक डाक के माध्यम से सेब भेजा है। सेब की गुणवत्ता बेहतर होने से अब वह बाजार में जाकर सेब भेजने की जगह बागीचे से ही सेब बेच रहे हैं। इस साल उन्होंने मुंबई के एक आढ़ती को 130 रुपए प्रति किलो दाम पर सेब बेचा है। बाहरी राज्यों के कई आढ़ती भी जीत नेगी के बागीचे में पहुंच रहे हैं। इस साल उन्होंने 350 रूपए प्रति किलो दाम पर बागीचे से ही सेब बेचा है।

मेरे यहां बाहर से लोग उत्पाद खरीदने के लिए आए और उन्होंने मेरे सेब की तुलना रासायनिक विधि से तैयार सेब से की। स्वयं सेब को आंकने के बाद अब वह भी मुझसे सेब मांग रहे हैं। खरीददारों की मानसिकता में आ रहा यह बदलाव प्राकृतिक खेती के लिए निश्चय ही उत्साहवर्धक है।

जीत नेगी ने इस साल कुठ और हींग पर भी प्राकृतिक खेती का ट्रायल लगाया है। इसका बीज वह कृषि विज्ञान केंद्र से लेकर आए हैं और परिणामों का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अगर यह ट्रायल सफल रहता है तो वह बड़े स्तर पर हींग की खेती करेंगे। एक फसल सीजन वाले इस क्षेत्र में वह अगले साल से सेब का हाई–डेंसिटी बागीचा लगाने की योजना बना रहे हैं ताकि आर्थिकी को और सुदृढ़ कर सकें।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 20 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 20 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 2,600 मीटर

सेब की किस्में– ब्लैक रॉयल रेड गोल्डन, जेरोमाइन, गेल गाला, रेड विलॉक्स, अर्ली रेड वन

अन्य फसलें– आलू, मटर, कुठ, हींग काला जीरा

रसायनिक खेती – व्यय– 1,00,000 आय– 15,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 15,000 आय– 15,00,000

प्राकृतिक खेती से थमा फसल का उतार-चढ़ाव

आत्मा राम
मो.- 94184-40115

उत्तम स्वास्थ्य ही इंसान का सर्वोत्तम साथी है, वर्षों तक लोगों को यह संदेश देने वाले रंग्दा–खो गांव के आत्मा राम ने पाया कि रसायनिक तरीके से उगी फल–सब्जियों के आने से लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़े हैं। स्वास्थय की महत्ता जानने वाले आत्मा राम ने इस स्थिति में बदलाव लाने और रसायनरहित फल–सब्जी एवं खाद्यान्न उगाने के लिए 'प्राकृतिक खेती' तकनीक को अपनाया और अब क्षेत्र के बाकी किसान–बागवानों को भी इस विधि से जोड़ रहे हैं।

हेल्थ सुपरवाइजर के पद से सेवानिवृत्त हुए कल्पा विकास खंड के निवासी आत्मा राम ने बताया कि खेत–बागीचे में बढ़ते कीटनाशकों तथा अन्य रसायनों के प्रयोग से तंग आ गए थे। एक तरफ खर्च बढ़ रहा था तो दूसरी तरफ बागीचे में कम उत्पादन की वजह से नुकसान भी बढ़ रहा था। 2018 में उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाया और इसके परिणामों से बेहद खुश हैं।

63 साल के आत्मा राम ने बताया कि उन्होंने रसायनिक और जैविक दोनों तरह की पद्धतियों का प्रयोग करने के बाद प्राकृतिक खेती की शुरूआत की है। जब वह रसायनिक और जैविक खेती कर रहे थे तो बाजार में दुकानदार अपने हिसाब से कीटनाशक और अन्य आदान देते थे। हर बार बाजार में नए कीटनाशक और आदान आते थे जो खेती–बागवानी के खर्च को बढ़ा रहे थे। विकल्प तलाश रहे आत्मा राम को विभाग के अधिकारियों से प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला और उन्होंने इस खेती विधि को अपना लिया।

प्राथमिक जानकारी से उत्साहित आत्मा राम ने 2018 में कुफरी, शिमला में पालेकर जी से प्राकृतिक खेती का विधिवत प्रशिक्षण लिया। 6 दिन के इस प्रशिक्षण शिविर से वह इतना प्रभावित हुए कि घर आते ही पूरे बागीचे में प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि पहले एक साल अच्छी फसल मिलती थी और दूसरे साल फसल कम हो जाती थी लेकिन इस विधि को अपनाने के बाद उत्पादन की अस्थिरता कम हुई। फलों के अलावा अनाज और सब्जी पर भी उन्होंने इस विधि को अपनाया है। इस साल अपने खेतों से उन्होंने 1.5 क्विंटल गोभी, 1 क्विंटल टमाटर, 1 क्विंटल कद्दू की फसल ली है।

3 साल से प्राकृतिक खेती कर रहे आत्मा राम ने बताया कि इस साल बेटे की बीमारी की वजह से

उनका शेड्यूल बिगड़ गया जिससे सेब के पौधों की पत्तियां असमय गिर गईं। वूली एफिड रोग का भी प्रकोप हुआ लेकिन दशपर्णी अर्क के छिड़काव से यह बीमारी काफी हद तक नियंत्रित हो गई। इस बार हालांकि फसल कम है लेकिन फल की गुणवत्ता बेहतर है।

> *मैंने स्वयं यह महसूस किया है कि अच्छी सेहत के लिए अच्छा खानपान जरूरी है जो प्राकृतिक खेती से तैयार उत्पादों से ही मिल सकता है। यह विधि किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए फायदेमंद है। किसान-बागवान भाइयों को इसे जरूर अपनाना चाहिए।*

आत्मा राम का खेती–बागवानी मॉडल जिला के अन्य किसानों को भी प्रोत्साहित कर रहा है। कई किसान–बागवान इनके बागीचे में पहुंच रहे हैं और प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी जुटा रहे हैं। आत्मा राम व्यक्तिगत तौर पर भी कुछ बागवानों का मार्गदर्शन कर उन्हें प्राकृतिक खेती की तरफ मोड़ रहे हैं।

<u>विस्तृत विवरण</u>

कुल जमीन– 10 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 10 बीघा

बागीचे की उंचाई– 2,115 मीटर

सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, आर्गन स्पर, सुपरचीफ, गेल गाला, गोल्डन स्पर

अन्य फसलें– मक्की, राजमाह, मटर, लहसुन, टमाटर, गोभी, शिमला मिर्च, घीया, लौकी, मूली, नाशपाती, जापानी फल एवं अंगूर

रसायनिक खेती – व्यय– 30,000 आय– 2,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 4,000 आय– 5,00,000

परिवार की डांट नहीं रोक पाई परिवर्तन की बयार

गंगा सरनी बिष्ट
मो.-76781-70831

परिवर्तन बिना मेहनत और चुनौतियों का सामना किए नहीं आता है। किन्नौर जिला के किल्बा गांव की गंगा सरनी बिष्ट ने जब एक खेत में प्राकृतिक खेती का ट्रायल लगाया तो सास–ससुर से डांट पड़ी। मगर पालेकर जी के शिविर से घर लौटी गंगा ने हिम्मत नहीं हारी और प्राकृतिक खेती आदानों का इस्तेमाल करती रहीं। जब खेत में फ्रासबीन, मूली और धनिए की अच्छी पैदावार मिली तो उन्होंने सेब पर भी प्रयोग शुरू कर दिया।

दिल्ली में शिक्षक रही गंगा सरनी ने हिंदी में एमफिल तक की पढ़ाई की है। उन्होंने बताया कि सेहत संबंधी दिक्कतों के चलते उन्हें शहर छोड़ गांव आना पड़ा। इस दौरान उन्होंने महसूस किया कि बढ़ती बीमारियों का एक बड़ा कारण शुद्ध खान–पान का न मिलना है। 2013 से उन्होंने अपने खेतों में अलग–अलग खेती विधियों पर प्रयोग शुरू कर दिया। इंटरनेट के माध्यम से उन्हें प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला और 2018 में उन्होंने कुफरी में सुभाष पालेकर से प्रशिक्षण प्राप्त कर इस विधि को अपना लिया।

वर्तमान में गंगा 6 बीघा भूमि में सेब के 250 पौधों के साथ मूली, धनिया, फ्रासबीन, आलू, मटर, गाजर, लौकी, खीरा की उपज ले रही हैं। उन्होंने बताया कि सेब–बागवानी पर इस विधि का प्रयोग करना बड़ी चुनौती था। लेकिन वह अपने फैसले पर अडिग रहीं और अलग–अलग खेती आदानों का बागीचे में प्रयोग शुरू कर दिया। गंगा का साथ देने के लिए उनके पति ने भी 2019 में एयर इंडिया से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। अब यह दंपती सफलतापूर्वक अपने खेत–बागीचे में प्राकृतिक खेती कर रहा है।

गंगा ने बताया कि जीवामृत और खट्टी लस्सी से जहां फफूंदजनित रोगों पर नियंत्रण हुआ वहीं सप्तधान्यांकुर के इस्तेमाल से सेब में चमक और रंग बेहतर हुआ है। इस साल उन्होंने अपने बागीचे से 10 हजार का मटर व 4 हजार का धनिया स्थानीय बाजार में बेचा है। गंगा कहती हैं कि प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना खेती–बागवानी की तकदीर बदलने के साथ महिलाओं को सशक्त भी कर रही है। विभाग से मिल रहा प्रोत्साहन महिला किसानों के आत्मविश्वास को बढ़ा रहा है। अब महिलाएं घर से निकलकर दूसरे किसानों को इस विधि से जोड़ रही हैं और अपना उत्पाद खुद बेच रही हैं।

इस साल गंगा ने अपने खेत में हींग का ट्रायल लगाया है। अगर यह सफल रहता है तो वह बाकि किसानों के हींग के साथ अपने खेत में लगे हींग की तुलना करेंगी। गांव की महिला किसानों को इस विधि की तरफ मोड़ने के लिए गंगा ने एक वाट्सऐप ग्रुप बनाया है जिसमें वह जानकारी साझा करती हैं। अपने संसाधन भंडार से वह नई किसानों को आदान भी देती हैं ताकि जल्द ही उन्हें प्राकृतिक खेती से जोड़ा जा सके।

मैं वाट्सऐप पर अपने दिल्ली के पड़ोसियों को अपने खेत-बागीचे का उत्पाद दिखाती हूं और उनके लिए इस विधि से उगी फल-सब्जी भी लेकर जाती हूं। सभी इसके स्वाद और गुणवत्ता की तारीफ करते हैं। मैं बेहद खुश हूँ।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 10 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 6 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 1,881 मीटर

सेब की किस्में– जैरोमाइन, गेल गाला, रॉयल डिलिशियस

अन्य फसलें– मूली, धनिया, फ्रासबीन, आलू, मटर, गाजर, लौकी, खीरा

रसायनिक खेती – व्यय– 12,000 आय– 1,50,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 3,000 आय– 2,50,000

प्राकृतिक खेती का अग्रदूत बना थानापति महिला समूह

सरोज देवी (प्रधान थानापति महिला समूह) मो.- 98056-36382

किन्नौर जिला के रिस्पा गांव का थानापति महिला समूह प्राकृतिक खेती का अग्रदूत बनकर उभरा है। 20 महिलाओं का यह समूह सामूहिक रूप से 15 बीघा भूमि पर प्राकृतिक खेती करने के साथ बाकि महिलाओं को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। 2.5 बीघा भूमि पर लगे फार्म स्कूल में यह समूह विविध फसलों पर प्रयोग करता है और फिर इसके सदस्य व्यक्तिगत तौर पर भी इन फसलों को लगाते हैं। अभी इस समूह के सदस्य सेब, काला जौ, मटर, धनिया, मूली, शलगम, राजमाह और टमाटर प्राकृतिक खेती विधि से उगा रहे हैं।

समूह की प्रधान सरोज देवी ने बताया कि 2018 में उनके गांव में कृषि विभाग ने प्राकृतिक खेती पर 2 दिन का शिविर लगाया जिसमें समूह के सभी सदस्यों ने भाग लिया। प्राकृतिक खेती की बारीकियों को जानने के लिए इस समूह की 5 सदस्य एक्सपोजर विजिट पर करनाल भी गई हैं ।

समूह की सदस्य-

सरोज कुमारी, राजवंती, सुदेश कुमारी, रानी देवी, राम सरणी, छेरिंग लामो, पुष्पा देवी, मंजू कुमारी, रक्षा कुमारी, इंदिरा देवी, सीता देवी, सूरज रेखा, जगती देवी, मीना कुमारी, लक्ष्मी देवी, विमलेश कुमारी, योगिता कुमारी, अनिता कुमारी, रजनी

"प्राकृतिक खेती के परिणामों से उत्साहित होकर मैं भी व्यक्तिगत तौर पर अब समूह के बाकि सदस्यों की तरह इस खेती का दायरा बढ़ाने की योजना पर काम कर रही हूँ। मेरी देखा-देखी में पड़ोस की महिलाएं भी इस खेती को अपनाना शुरू कर चुकी हैं। - लक्ष्मी देवी"

2018 में इस समूह ने प्राकृतिक खेती आदानों को बनाकर उपयोग करना शुरू कर दिया। शुरूआत में उन्हें गांव के लोगों ने हतोत्साहित भी किया। गांव के लोग कहते थे कि बिना कीटनाशकों के खेती–बागवानी संभव नहीं है। मगर जब इस समूह ने प्राकृतिक खेती से पहली फसल ली तो उसकी गुणवत्ता देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए।

समूह की सदस्य राजवंती ने बताया कि सेब पर प्रयोग से लोग कतराते हैं लेकिन हमने पहले साल में ही सेब पर भी इस विधि को अपनाया। हमें सेब पर इसके बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। प्राकृतिक खेती आदानों से पौधों ताकतवर हुए हैं, फल का रंग और आकार बढ़ा है। हमारे सेब के पौधों में बीमारियां भी कम आ रही हैं जिसे देखकर गांव के अन्य बागवान भी इस खेती के बारे में जानकारी लेने लगे हैं।

समूह की सुदेश कुमारी ने बताया कि गांव में भी अब प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूकता आ रही है। धीरे–धीरे लोग रसायनों के प्रयोग को कम कर रहे हैं। गांव में इस साल पहले के मुकाबले में कम कीटनाशकों का प्रयोग हुआ है। अब यह समूह अपने गांव के साथ– साथ दूसरे गांवों में भी प्राकृतिक खेती का प्रसार कर रहा है। समूह के सदस्य प्राकृतिक खेती के फायदों के बारे में किसानों और बागवानों को बताते हैं और उनसे इस विधि को अपनाने का आग्रह करते हैं। किसान–बागवानों को इस विधि के प्रत्यक्ष परिणाम दिखाने के लिए वे अपने खेत–बागीचे में भी उन्हें आमंत्रित करते हैं।

देश के आखिरी गांव में सुशील ने थामी प्राकृतिक खेती का पताका

सुशील सागर
मो.- 94590-88861

चीन की सीमा के साथ सटे देश के आखिरी गांव में भी प्राकृतिक खेती अपनी पहुंच बना चुकी है। साल में एक फसल सीजन वाले इस क्षेत्र में किसान सुशील सागर प्राकृतिक खेती के ध्वजवाहक बनकर उभरे हैं। 2019 में नौणी विश्वविद्यालय से प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लेने वाले सुशील अब गांव के अन्य लोगों को भी पर्यावरण हितैषी प्राकृतिक खेती से जोड़ रहे हैं।

सुशील ने बताया कि आलू और मटर उनके गांव के किसानों की प्रमुख फसल है इसलिए प्रशिक्षण के बाद उन्होंने इन फसलों से ही प्राकृतिक खेती की शुरूआत की। प्राकृतिक खेती आदान बनाने के लिए उन्होंने स्थानीय तौर पर जुमू के नाम विख्यात याक के गोबर और गोमूत्र का इस्तेमाल किया। इस विधि से खेती के बाद जब उन्होंने आलू की पैदावार ली तो वे हैरत में आ गए, जहां आलू का आकार बढ़ गया था वहीं यह पहले की तुलना में ज्यादा ठोस था। मटर के दाने भी ज्यादा थे जिसके फलस्वरूप भार बढ़ा साथ ही पहले की तरह आने वाले पाउडर मिलिड्यू रोग से भी निजात मिली।

इस विधि में पारंगत हो चुके सुशील कहते हैं कि अंतर फसल का सिद्धांत उनके लिए नया है। उनके क्षेत्र में किसान एक फसलीय प्रणाली को अपनाते हैं लेकिन उन्होंने अंतर फसलें लगाना शुरू किया है जिसके फायदों के बारे में साथी किसान भी पूछते हैं। इस साल उन्होंने 3 क्विंटल गेहूं, 15 क्विंटल आलू, 20 क्विंटल मटर उगाया है। इसके साथ ही एंटी आक्सीडेंट से भरपूर ओग्ला और फाफड़ा की पैदावार भी सुशील ने प्राकृतिक खेती से ही ली है। उन्होंने बताया कि परिवार की खपत के लिए उपज रखने के बाद बाकि उपज को रिकांगपिओ, रामपुर और ठियोग में बेचा है जिसके अच्छे दाम मिले हैं।

गांव में प्राकृतिक खेती का प्रसार करने के लिए सुशील साथी किसानों को अपने घर से आदान बनाकर दे रहे हैं। अभी तक गांव के 3 युवा किसान उनके मार्गदर्शन में इस विधि को अपना चुके हैं। वह अपने खेत का उत्पाद भी अन्य किसानों को देते हैं और उन्हें स्वयं अंतर महसूस करने की सलाह देते हैं ताकि बिना किसी दबाव के वह इस खेती विधि को अपनाएं। इस साल से सुशील ने बीज संरक्षण का काम शुरू किया है ताकि नए जुड़ने वाले किसानों को देसी बीज भी मुहैया करवा सकें। उन्हें विश्वास है कि देश का यह आखिरी गांव जल्दी ही संपूर्ण प्राकृतिक खेती गांव के नाम से जाना जाएगा।

शुरूआत में जब मैंने इस विधि का ट्रायल किया तो माता-पिता नहीं मानते थे और फसल नुकसान की बात कहते थे। मैं फसल का नुकसान झेलने के लिए भी तैयार था। लेकिन जब अच्छे परिणाम मिले तो मैंने इस विधि को बाकी खेतों में भी शुरू कर दिया। अब मुझे पूरे परिवार का सहयोग मिल रहा है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 10 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 3.5 बीघा

फसलें– गेहूं, आलू, जौ, ओग्ला, फाफड़ा, मटर

प्राकृतिक खेती – व्यय– 3,000 आय– 65,000

प्राकृतिक खेती से उगाए सेब के आगे विदेशी सेब भी फीका

छेतन पल्ज़र
मो.- 88947-72623

मैंने इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, अमेरिका और ब्राजील का सेब खाया है लेकिन प्राकृतिक खेती से उगाए सेब के आगे ये सब फीके हैं। साइज में भले ही वे बड़े लगते हों पर मिठास तो प्राकृतिक सेब की ही ज्यादा है। यह अनुभव है किन्नौर जिला के थोपन गांव के बागवान छेतन पल्ज़र का जो पिछले साढ़े 4 दशक से खेती–बागवानी कर रहे हैं। पूह विकास खंड के छेतन ने बताया कि एक धार्मिक संस्था द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने विदेशी सेब का भी स्वाद चखा मगर यह उन्हें रास नहीं आया। बड़े–बड़े विकसित देशों में उन्नत तकनीक से उगे सेब पर प्राकृतिक विधि से तैयार सेब स्वाद में भारी पड़ा।

समुद्रतल से 2,900 मीटर पर बागवानी कर रहे छेतन कृषि–बागवानी की नूतन तकनीकों के प्रयोग में अग्रणी रहते हैं। उन्होंने बताया कि 2019 में नौणी विश्वविद्यालय में आयोजित एक प्रशिक्षण ने उनकी किस्मत बदल दी। प्राकृतिक खेती पर आयोजित इस शिविर के दौरान वह इतने प्रभावित हुए कि रसायनों का प्रयोग खत्म करने का संकल्प ले लिया। पहाड़ी गाय के गोबर–गोमूत्र का प्रयोग करते हुए छेतन ने अपनी पूरी 10 बीघा भूमि को प्राकृतिक खेती में परिवर्तित कर लिया है एवं इसके परिणामों से बेहद संतुष्ट हैं।

छेतन ने बताया कि वूली एफिड, माइट, पाउडर मिलिड्यू और आकस्मिक पतझड़ को रोकने के लिए वह कीटनाशकों का प्रयोग करते थे। दोनों बागीचों में वह 13 ड्रम कीटनाशक का छिड़काव करते थे जिसमें 55 से 60 हजार का खर्च आ जाता था। प्राकृतिक खेती में अब आदानों पर होने वाला खर्च लगभग 10 गुना कम हो गया है। इतना ही नहीं साल दर साल वूली एफिड और बाकी मौसमी बीमारियों का प्रकोप अपने आप कम हो रहा है, जिससे साथी बागीचे वाले भी आश्चर्यचकित हैं।

छेतन के पास स्कारलेट, ब्लैक रॉयल और रेड डिलिशियस समेत 7 किस्म के 200 फलदार सेब के पेड़ हैं। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती करने से पहले सेब में अच्छा रंग न आने की समस्या थी लेकिन अब बहुत अच्छा रंग आ रहा है। प्राकृतिक खेती के सहफसल सिद्धांत को अपनाते हुए वह बागीचे से राजमाह और मटर की फसल भी ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस साल मौसम की बेरूखी के चलते क्षेत्र में सेब कम है। पौधों में फूल आने के समय अचानक हुई बर्फबारी से बागवानों को बड़ा नुकसान हुआ है।

छेतन ने बताया कि प्राकृतिक खेती में भी फसल रसायनिक खेती के बराबर ही है मगर स्वाद और सेल्फ लाइफ अनूठी है। प्राकृतिक सेब के बेहतर स्वाद को देखते हुए अब तो आढ़ती भी अलग से मंडी लगाकर इसे बेचने की सलाह दे रहे हैं।

पालेकर जी के शिविर में जब प्राकृतिक खेती के बारे में जाना तो लगा कि किस्मत अच्छी है जो यहां पहुंच गया। मैंने शिविर के दौरान ही रसायनों को तिलांजली देने का तय कर लिया और आज इस खेती को खुशी से अपना रहा हूं। साल दर साल मेरे बागीचे में बीमारियां कम हो रही हैं और हजारों रूपए के खेती खर्च की भी बचत हो रही है।

<u>विस्तृत विवरण</u>

कुल जमीन– 10 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 10 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 2,900 मीटर

सेब की किस्में– स्कारलेट, ब्लैक रॉयल, रेड डिलिशियस, रेड रिचर्ड, रेड गोल्डन, गेल गाला

अन्य फसलें– मटर, राजमाह, जौ

रसायनिक खेती – व्यय– 60,000 आय– 7,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 6,000 आय– 7,00,000

जिस बागीचे को काटने का सोचा, प्राकृतिक खेती ने वहां भी उगा दिया सेब

शेखर राज
मो.-70185-45515

जिस बागीचे में पेड़ मर रहे थे, जड़ों का विकास रूक गया था और लगता था कि पूरा बागीचा ही काटना पड़ेगा, प्राकृतिक खेती ने उसमें अपना चमत्कार दिखाया है। इस खेती विधि से पौधों में नई जान आ गई और बगीचा सेब से लद गया। यह कहना है चांगो गांव के युवा किसान शेखर राज का जो 3,098 मीटर की ऊंचाई पर प्राकृतिक विधि से खेती–बागवानी कर रहे हैं। पूह विकास खंड के 37 वर्षीय इस बागवान ने बताया कि प्राकृतिक खेती के परिणाम आश्चर्यजनक हैं और किसान–बागवान भी अचंभे में आ जाते हैं।

शेखर राज ने बताया कि वह पिछले 20 सालों से खेती–बागवानी कर रहे हैं और एक फसल सीजन वाले इस इलाके में पैदावार बढ़ाने के लिए बाकि किसान–बागवानों की तरह जमकर रसायनों का प्रयोग कर रहे थे। यहां की आर्थिकी के आधार सेब पर भी उन्होंने रसायनों का इस्तेमाल अप्रत्यशित रूप से बढ़ाया। शुरूआती सालों में तो पैदावार बढ़ी लेकिन रसायनों के घातक दुष्परिणाम भी सामने आने लगे। हर साल पौधे मरने लगे और 2019 आते–आते उन्होंने रसायन आधारित खेती छोड़ने की ठान ली।

पंचायत स्तर के प्रशिक्षण शिविर में हिस्सा लेने के बाद देसी गाय न होने के चलते इस बागवान ने घर में मौजूद जर्सी गाय के गोबर–गोमूत्र का इस्तेमाल किया लेकिन सही परिणाम नहीं मिले। सेब के पौधों पर फंगल इन्फेक्शन बढ़ गया। एक साल बाद उन्होंने हरियाणा के करनाल से साहीवाल नस्ल की गाय लाई और उसके गोबर और मूत्र से विभिन्न आदान बनाकर बागीचे में प्रयोग करने लगे जिसके आशतीत परिणाम मिले। शेखर राज ने बताया कि इस खेती से उनका खर्चा भी कम हो गया। पहले बागीचे में 3 से 4 लाख की खाद एवं कीटनाशक लगते थे, मगर इस विधि को अपनाने के बाद खर्च 50 हजार ही रह गया है।

पिछले 3 साल से शेखर सेब के 850 पौधों पर इस विधि का सफल प्रयोग कर रहे हैं। वह कहते हैं कि प्राकृतिक खेती के प्रत्यक्ष अनुभवों ने मेरे विश्वास को अटूट बना दिया है। मेरे बागीचे को देखकर पड़ोसी बागवान भी उत्साहित है और अकसर मेरे पास आकर इस विधि के बारे में सवाल करता है। शेखर ने बताया कि सेब सीजन के दौरान उनके गांव से हर दिन 10 गाड़ियां सेब की निकलती हैं और अकसर बागवान बाहर के राज्यों में ही सेब बेचते हैं। पिछले कुछ सालों में लागत बेतहाशा बढ़ी है और बाजार में सेब की कीमत में आ

रहे उतार–चढ़ाव बागवानों के लिए चिंता का विषय बने हैं। ऐसे में कम लागत और जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने वाली प्राकृतिक खेती तकनीक यहां के बागवानों के लिए फायदे का सौदा बन सकती है।

इस साल सेब के बागीचे वूली एफिड और माइट रोग के चलते बड़े तौर पर प्रभावित हुए हैं। बागवानों ने इनके नियंत्रण के लिए कई रसायनिकों के छिड़काव किए लेकिन फिर भी खास फर्क नहीं पड़ा। जबकि मेरे बागीचे में प्राकृतिक आदानों से ये रोग आसानी से नियंत्रित हो गए।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 25 बीघा
प्राकृतिक खेती के अधीन– 25 बीघा
बागीचे की उंचाई– 3,098 मीटर
सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, रेड रॉयल, रिचर्ड डेलिशियस, गोल्डन, गाला, ग्रेनी स्मिथ
अन्य फसलें– मटर, आलू, राजमाह, गोभी, टमाटर, प्याज, जौ एवं मक्की
रसायनिक खेती – व्यय – 4,00,000 आय – 35,00,000
प्राकृतिक खेती – व्यय – 50,000 आय – 50,00,000

पूर्व राज्यपाल की किताब को मार्गदर्शक बनाकर बदला खेती का स्वरूप

यशपाल सिंह
मो.- 94189-83300

सांगला घाटी में बसे बोनिंग सोरिंग गांव के 64 वर्षीय किसान यशपाल सिंह ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती अपनाकर अपनी खेती और बागवानी की तस्वीर बदल दी है। 2019 में पंचायत में लगे 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के बाद इस खेती से जुड़े यशपाल ने जिला के प्रमुख किसानों में अपना नाम बनाया है।

पूर्व राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी से खासे प्रभावित इस किसान ने उनकी लिखी किताब को ही मार्गदर्शक बनाकर इस खेती की शुरूआत की। घर में मौजूद देसी गाय के गोबर–मूत्र का इस्तेमाल कर किताब में बताए अनुसार उन्होंने खेत–बागीचे में प्रयोग करना शुरू किया और आशातीत परिणाम पाने के बाद साथी किसानों को भी इसके बारे में बताया। 3 साल के अनुभव के बाद उन्होंने आदान बनाने के लिए उनके भौगोलिक क्षेत्र में न मिलने वाले पौधों का विकल्प भी खोजा है और सफलतापूर्वक उनका इस्तेमाल भी कर रहे हैं।

यशपाल ने बताया कि इस खेती में परिवर्तित होने के बाद उन्होंने व्यवस्थित ढंग से फसलें लेना शुरू किया है। मार्च से जून तक वह अपने खेतों से मटर की फसल लेते हैं। इसके बाद राजमाह, ओग्ला और फाफड़ा खेतों में लगाया जाता है। इसी के समानांतर मौसमी सब्जियां भी वह उगाते हैं। खेती के अतिरिक्त आर्थिकी के आधार सेब पर भी वह सफलता से इस विधि का प्रयोग कर रहे हैं। उनके पास 1,000 सेब के पौधे हैं जिनमें से 400 फलदार हैं। उन्होंने बताया कि विभिन्न आदानों के इस्तेमाल से बागीचे की सेहत साल दर साल अच्छी हो रही है।

पिछले साल लॉकडाउन के दौरान उन्होंने पालेकर जी के ऑनलाइन शिविरों में हिस्सा लिया और सेब का पौधा लगाने का तरीका सीखा। इससे अब बागीचे में जड़ सड़न रोग का प्रकोप कम हुआ है। यशपाल ने पिछले साल 450 पेटी सेब का उत्पादन लिया था लेकिन इस साल मौसमी कारणों से उत्पादन कम है। पहले फूल आने के समय अचानक हुई बर्फबारी और बाद में समय पूर्व मानसून सेब के लिए घातक सिद्ध हुआ। इस साल उन्होंने बागीचे से 3 क्विंटल राजमाह सह–फसल के तौर पर लिया है।

यशपाल अपना उत्पाद बेचने के लिए नई तकनीक का सहारा ले रहे हैं। वह फेसबुक और वाट्सऐप ग्रुपों पर अपनी उपज के बारे में जानकारियां डालते रहते हैं जिसके बाद ग्राहक खुद ही फोन कर लेता है। जिला कृषि विभाग के ग्रुप में भी वह यह जानकारी साझा करते हैं जिससे घर बैठे ही उपज बिक जाती है। इससे समय की बचत होती है। अपनी खेती–बागवानी को संवारने के साथ यशपाल साथी किसानों को इस खेती से जोड़ रहे हैं। गांव के 20 किसान लगभग 15 बीघा भूमि पर उनके मार्गदर्शन में खेती कर रहे हैं।

खेती-बागवानी की बिगड़ती स्थिति को सुधारने के लिए प्राकृतिक खेती ही सबसे अच्छा विकल्प है। किसान-पर्यावरण हितैषी यह खेती विधि कम खर्च में भी बराबर उपज देती है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 30 बीघा
प्राकृतिक खेती के अधीन– 10 बीघा
बागीचे की उंचाई– 2,629 मीटर
सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, रॉयल रेड,
रॉयल रिचर्ड, गोल्डन,
अन्य फसलें– ओग्ला, फाफड़ा, सफेद राजमाह, मटर
रसायनिक खेती – व्यय – 1,50,000 आय – 5,00,000
प्राकृतिक खेती – व्यय – 20,000 आय – 5,70,000

दावे के साथ कहता हूँ-100 प्रतिशत रसायनमुक्त है मेरा सेब

इंद्र प्रकाश
मो.- 94595-73435

प्राकृतिक खेती से तैयार सेब को बाजार में बेचना थोड़ा चुनौती भरा है। बाहरी राज्यों के खरीददार जिन्हें इस खेती के बारे में पता नहीं वह प्राकृतिक विधि से तैयार सेब को भी रसायनिक सेब जितना दाम ही देते हैं। जब मैं कहता कि यह रसायनरहित है तो सभी कागज मांगते थे। पिछले साल मैंने हरियाणा की एक निजी लैब में सैंपल भेजा, परिणाम वही आया जो पहले से मालूम था– 100% रसायनमुक्त। अब खरीददारों को सीधे रिपोर्ट दिखाता हूं। यह कहना है पूह विकास खण्ड के बागवान इंद्र प्रकाश का।

2018 में पालेकर जी के गवास क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लेकर आए इंद्र के मन में बाजार पर निर्भरता खत्म करने की बात घर कर गई और उन्होंने इस विधि को अपनाने का मन बना लिया। बाद में विभाग से नामित होने के बाद उन्होंने कुफरी में 6 दिन का प्रशिक्षण लिया और जैविक खेती छोड़कर प्राकृतिक खेती की शुरूआत कर दी।

इंद्र ने बताया कि 2018 में जब शुरूआत की तो बागीचे में वूली एफिड, माईट और पाउडर मिलिड्यू बहुत आया लेकिन जीवामृत, खट्टी लस्सी के प्रयोग से अगले साल तक यह कम हो गया। अब तो यह रोग नाममात्र ही रह गया है। 12 बीघा में 600 से अधिक पौधों पर प्राकृतिक आदानों के उपयोग से इंद्र ने सेब के रंग, आकार और सेल्फ लाइफ में अंतर देखा है। आड़ू और प्लम के 5 तथा खुमानी के 10 पौधों पर भी यह विधि कारगर साबित हुई है। बागीचे में रोगों का प्रकोप कम हुआ है और पौधों के मरने की दर भी घटी है। उन्होंने बताया कि सेब की पैदावार भी पहले के वर्षों के मुकाबले 30% बढ़ी है। पिछले साल उन्होंने 2,000 पेटी की पैदावार ली है। इस साल मौसम अनुकूल न होने के चलते उत्पादन में गिरावट की आशंका है।

इंद्र प्रकाश अपना सेब टापरी, दिल्ली और मुंबई में बेचते हैं। पिछले साल उन्हें 20 किलो की पेटी का 3,200 रूपए दाम मिला है। उन्होंने बताया कि उनके क्षेत्र से सेब की 2 लाख पेटियां निकलती हैं। अगर सभी बागवान इस विधि को अपनाते हैं तो हम एक कंपनी बनाकर अपना सेब और उन्य उत्पाद बेच सकते हैं।

इंद्र प्रकाश की 75 वर्षीय माता कमला नेगी भी इस विधि से संतुष्ट हैं। वह कहती हैं कि जब से रसायनों का प्रयोग बढ़ा है तबसे इंसान को कई तरह की बीमारियों ने घेर लिया है। पहले बिना रसायनों के

खेती–बागवानी होती थी और स्वास्थ्य उत्तम रहता था। इस खेती विधि से दोबारा आस जगी है कि रसायनमुक्त खाद्यान्न फिर से उपलब्ध होगा जो किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए फायदेमंद है।

मेरे पिता उद्यान विभाग के बड़े अधिकारी थे और रसायनों के प्रयोग के लिए हमेशा मना करते थे। पालेकर खेती से मैं उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ा रहा हूं, यह सोचकर काफी संतोष मिलता है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 45 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 12 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 2,689 मीटर

सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, गेल गाला, डार्क रॉयल, ब्लैक रॉयल, रेड रॉयल, रेड गोल्डन, चौलेंजर, ग्रेनी स्मिथ

अन्य फसलें– गोभी, टमाटर, कद्दू, खीरा, गाजर, बादाम, खुमानी, प्लम, आड़ू

रसायनिक खेती – व्यय– 1,25,000 आय– 17,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 30,000 आय– 19,00,000

कठिन भौगोलिक क्षेत्र में महिलाओं ने स्वीकारी प्राकृतिक खेती की चुनौती

शांति देवी (प्रधान महेश्वर महिला समूह चगांव) मो.- 98167-27117

जनजातीय जिला किन्नौर की कठिन भौगोलिक परिस्थितियां आम जनजीवन के लिए तो चुनौतिपूर्ण है ही लेकिन इन परिस्थितियों में खेती से जीवनयापन उससे भी ज्यादा चुनौति भरा है। मगर जिला के चगांव के महेश्वर महिला समूह ने न केवल प्राकृतिक खेती से फसल उत्पादन की चुनौति को स्वीकारा बल्कि सफलता प्राप्त करने के बाद आस–पास के गांवों में भी इस विधि का प्रसार कर रहा है।

महेश्वर महिला समूह की प्रधान शांति देवी ने बताया कि उनके समूह की 20 सदस्य 35 बीघा भूमि पर प्राकृतिक खेती कर रही हैं। उन्होंने बताया कि 2019 में उनकी पंचायत में प्राकृतिक खेती पर 2–दिन का शिविर हुआ जिसमें समूह के सदस्यों ने हिस्सा लिया और प्राकृतिक खेती की बारीकियां सीखीं। इसके तुरंत बाद कृषि विभाग की तरफ से साढ़े तीन बीघा में प्राकृतिक खेती पर प्रदर्शनी प्लॉट लगाया गया जिसमें राजमाश और फ्रासबीन सहित अन्य सब्जियां लगाई गई। समूह की सदस्यों ने साथ मिलकर देसी गाय के गोबर–मूत्र से आदान बनाए और इस भूमि पर प्रयोग किया। अच्छे परिणाम मिलने पर सदस्यों ने अपनी–अपनी जमीन पर भी इस विधि को अपनना शुरू कर दिया।

समूह की सदस्य सुनीला ने बताया कि प्राकृतिक खेती को लेकर उन्हें घर–परिवार का सहयोग भी मिल रहा है। उन्होंने बताया कि वह 5 बीघा भूमि पर राजमाश, सेब और फूलगोभी पर इस विधि से खेती कर रही हैं। पहले इस भूखंड पर 35,000 रूपए का खेती खर्च आ रहा था लेकिन प्राकृतिक खेती से यह आधे से भी कम रह गया है वहीं आमदनी भी 10 हजार बढ़कर डेढ़ लाख रूपए हो गई है। उन्होंने बताया कि इस साल मानसून सीजन में पहले की तुलना में अधिक बारिश हुई जिससे फसलों में नुकसान हुआ है। गोभी की फसल पर तो सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा है।

> *हमारा क्षेत्र राजमाह के लिए जाना जाता है और प्राकृतिक खेती से हमें इसमें अद्भुत परिणाम मिले हैं। अब तो कृषि विभाग भी राजमाह का बीज हमसे लेता है और जिला के बाकि किसानों को देता है। हमारे खेतों में उगी सब्जियों की भी स्थानीय बाजार में मांग बढ़ी है - राधा प्यारी*

महेश्वर समूह की सदस्य सेब पर भी प्राकृतिक विधि से बागवानी कर रही हैं। समूह से जुड़ी कौशल्या ने बताया कि सेब की फसल पर लोग प्रयोग करने से हिचकिचाते हैं लेकिन हमारे समूह ने सेब पर भी प्राकृतिक विधि का ट्रायल किया है। इस विधि से सेब के पत्तों का पीलापन खत्म हुआ है साथ ही माइट और स्कैब की समस्या पर भी नियंत्रण हुआ है। इससे हमारे आस–पास कीटनाशक इस्तेमाल कर रहे बागवान भी प्रभावित होकर इस विधि के प्रति आकर्षित हुए हैं।

महेश्वर महिला गांव के अन्य लोगों को भी प्राकृतिक खेती सिखा रहा है। समूह के सदस्य कहते हैं कि जिस तरह गांव में इस खेती की तरफ रूझान बढ़ रहा है उससे उम्मीद है कि जल्दी ही हमारा गांव रसायनमुक्त हो जाएगा।

समूह की सदस्य–

शांति देवी, सुशीला देवी, सुनीला, राधा प्यारी, राम दासी, कौशल्या, जग देवी, मीना कुमारी, यांडचेन नेगी, नीलम देवी, राज लक्ष्मी, सावित्री देवी, कन्या देवी, चरण देवी, शांति देवी, इंदु देवी, इंदरी देवी, शांति देवी, सीतामणी, सवल देवी

"प्राकृतिक खेती से लागत में कमी और आय में वृद्धि हो रही है जो महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आगे बढ़ा रहा है। अब तो आस-पास के गांवों की महिलाएं भी इस खेती को अपनाने के लिए आगे आ रही है - मीना कुमारी"

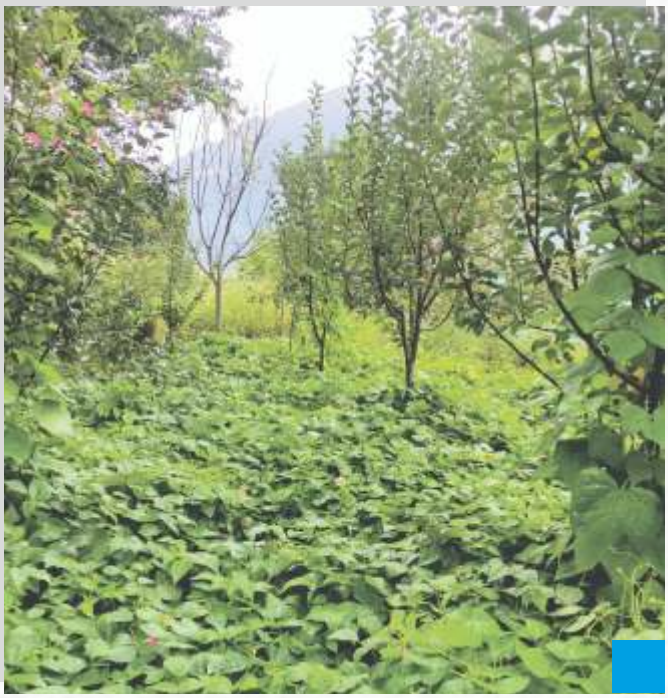

रसायनमुक्त गांव में बागवानों की पहली पसंद बन रही प्राकृतिक खेती

गौरव कुमार
मो:- 78764-64369

किन्नौर जिला का शलखर गांव क्षेत्र में रसायनों को तिलांजली देने वाला पहला गांव है। वर्षों खेत–बागीचे में कीटनाशकों के प्रयोग के बाद आए पारिस्थितिकीय बदलावों को देखते हुए गांव वालों ने अपने धर्मगुरू की सलाह के बाद रसायनों के प्रयोग को बंद कर दिया। अब इस गांव के लोग भी पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाने वाली प्राकृतिक खेती से जुड़ रहे हैं। ऐसे ही एक युवा किसान हैं 32 वर्षीय गौरव कुमार जो गांव में इस खेती के सूत्रधार बनकर उभरे हैं।

12वीं की पढ़ाई के बाद खेती–बागवानी से जीविका कमा रहे गौरव कुमार ने बताया कि पहले हमारे गांव में खाद और कीटनाशक दोनों का इस्तेमाल होता था। मगर हर साल बढ़ती बीमारियों, मिट्टी की क्षीण होती उर्वरता और बागवानी के लिए जरूरी मित्र कीटों की संख्या में कमी ने पूरे गांव के लोगों को चिंता में डाल दिया। गुरूदेव के मार्गदर्शन और गांव के एकमत फैसले के बाद सबने रसायनों को बंद कर दिया और जैविक खेती करने लगे। मगर जैविक खेती में लागत रसायनिक की तुलना में और बढ़ने लगी और 2 साल में ही मन उचट गया।

2018 में गांव में प्राकृतिक खेती पर लगा प्रशिक्षण शिविर उनके लिए गेमचेंजर साबित हुआ और उन्होंने विभागीय अधिकारियों की निगरानी में इस विधि का ट्रायल शुरू कर दिया। अधिकारियों की सलाह, आदानों का सही समय और तय मात्रा में प्रयोग तथा लगातार मेहनत से उन्हें सफलता मिली। धीरे–धीरे उन्होंने 5 बीघा बागीचे में इस विधि को पूरे तौर पर अपना लिया।

गौरव पिछले 3 साल से सेब के 250, बादाम के 30 और खुमानी के 5 पौधों पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती से वूली एफिड और माइट रोगों का नियंत्रण बाकि विधियों के मुकाबले ज्यादा कारगर तरीके से हो रहा है। जहां रसायनिक खेती के दौरान कीटनाशकों के स्प्रे से हर साल नई बीमारियां आती थीं वहीं रोगों के प्रकोप की दर भी बढ़ जाती थी। मगर प्राकृतिक खेती में ऐसा कुछ भी नहीं है। घर पर बनाए आदानों के प्रयोग से साल दर साल बीमारियां कम हो रही हैं। मटर और राजमाह जैसी सहफसलों से पौधे की पोषण जरूरतें पूरी हो रही हैं साथ ही अतिरिक्त आय भी हो रही है।

बिना दवाईयों के कम पैसे में होने वाली इस खेती ने मेरे गांव के साथ-साथ पड़ोसी गांव के किसानों को भी आकर्षित किया है। जब भी कोई मिलता है तो इस विधि के बारे में पूछता है। मेरे गांव में इस विधि के प्रति काफी उत्साह है और लोग इसे अपनाना शुरू कर चुके हैं।

गौरव हर साल चंडीगढ़ और दिल्ली के आढ़तियों को अपना सेब बेचते हैं। पिछले साल उन्होंने 450 पेटी सेब बेचा जिसमें उन्हें 20 किलो पेटी का औसतन 1800 रूपए रेट मिला। सेब के 10 किलो गिफ्ट बॉक्स का उन्हें 900 से 1000 रूपए का दाम मिला है। इस साल सेब के दाम में उतार चढ़ाव के बीच उन्होंने 250 पेटी 80 रूपए प्रति किलो की दर से बेची है। उन्होंने बताया कि गांव में एक एफपीओ बन रहा है और भविष्य में वह इस एफपीओ के माध्यम से ही अपना उत्पाद बेचेंगे।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 7 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 4 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 3,100 मीटर

सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, रेड रिचर्ड, रेड गोल्डन, गेल गाला

अन्य फसलें– बादाम, चौलाई, खुमानी, राजमाह, मटर

रसायनिक खेती – व्यय– 5,000 आय– 4,50,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 1,500 आय– 5,00,000

सरकार की योजना ने उत्साह बढ़ाया, मनमोहन ने सेब में प्राकृतिक खेती को अपनाया

मनमोहन नेगी
मो.-94182-18055

2015 में पदम् श्री सुभाष पालेकर के 5 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का हिस्सा बनकर मैं उनके विचारों और कृषि के प्रति उनकी समझ का कायल हो गया और घर आकर सब्जियों पर प्राकृतिक खेती शुरू कर दी। मैं सेब पर इस विधि को अपनाने का साहस नहीं जुटा पा रहा था लेकिन 2018 में जब प्रदेश सरकार ने इसे योजना का स्वरूप दिया तो मेरा हौसला बढ़ा। मैंने कुफरी में 6 दिन के प्रशिक्षण के बाद सेब बागवानी में भी इसे अपना लिया। यह कहना है कल्पा विकास खण्ड के 43 वर्षीय बागवान मनमोहन नेगी का जो 5 बीघा भूमि पर इस विधि से सफलतापूर्वक खेती–बागवानी कर रहे हैं।

कोठी गांव के निवासी मनमोहन नेगी वर्ष 2000 से कृषि–बागवानी कर रहे हैं। जिला में जब रसायनिक खेती ने जोर पकड़ा तो मनमोहन ने भी उसे अपनाया और डेढ़ दशक तक कीट–फफूंदनाशकों के साथ जमकर खाद डालते रहे। लेकिन इससे खेत–बागीचे की मिट्टी सख्त होने लगी, जल सारंध्रता निम्नतम हो गई तथा बीमारियों पर नियंत्रण कठिन होता गया। इन सभी स्थितियों में प्राकृतिक खेती से आशतीत सुधार हुआ और अब दृढ़ विश्वास से वह यह खेती कर रहे हैं।

मनमोहन ने सेब की जैरोमाइन किस्म के 10 पौधों पर उन्होंने इस विधि का परीक्षण किया। उन्होंने देखा कि कुछ पौधों में बीमारियां आई मगर उनका नियंत्रण हो गया और बाकि पौधों पर रोग का प्रकोप नहीं हुआ। रसायनिक की तुलना में कम रोग आने से वह उत्साहित हुए और पूरे बागीचे में इस विधि को अपना लिया।

वर्तमान समय में मनमोहन नेगी सेब के 160 पौधों पर प्राकृतिक खेती आदानों का प्रयोग कर रहे हैं, इनमें से 120 पौधे फलदार हैं। पहले बागीचे में पोषक तत्वों की कमी को पूरा करने के लिए मनमोहन रासायनिक खाद डालते थे पर अब इसे पूरी तरह बंद कर दिया है। नाइट्रोजन की कमी को वह मटर और राजमाह जैसी सहफसलें लगाकर पूरा कर लेते हैं।

इस शुष्क–शीतोष्ण क्षेत्र में किसान एक सीजन ही फसल ले पाते हैं। ऐसे में खेती–आधारित जीविका को बढ़ाने के लिए वह कई सारी फसलें एक साथ ले रहे हैं। उन्होंने बताया कि बागीचे में मटर, राजमाह के

अलावा वह 40–40 वर्ग मीटर के 2 पॉलीहाउस में टमाटर, शिमला मिर्च, सरसों, धनिया, गोभी सफलता से उगा रहे हैं। सभी फसलों की सेल्फ लाइफ पहले की तुलना में बढ़ी है और खेती खर्च 5 गुना कम हो गया है।

> *प्राकृतिक खेती में पैसे की बचत के साथ मिट्टी की सेहत भी बेहतर हो रही है जिससे इस विधि के प्रति बागवानों का रूझान बढ़ रहा है। मेरे आस-पास जो भी बागवान नया बागीचा लगा रहा है वह अब इस विधि को अपना रहा है।*

क्षेत्र के बाकि किसानों के साथ जिलाधीश कार्यालय के बाहर लगे स्टॉल से अपनी सब्जियां बेच रहे हैं। हर शुक्रवार को लगने वाले इस स्टॉल में 2–3 घंटे के भीतर ही सारा उत्पाद बिक जाता है। इस साल उन्होंने 50 हजार की सब्जियां बेची हैं। अब तो फोन पर भी वह आर्डर लेकर उपभोक्ता के यहां सब्जियां पहुंचा आते हैं। स्थानीय लोग प्राकृतिक खेती के प्रति जागरूक हो चुके हैं लेकिन बाहरी राज्यों के लोग अभी जागरूक नहीं हैं। इससे सेब और बाकि फसलों का मेहनत के अनुकूल दाम नहीं मिल पाता है।

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 6.5 बीघा
प्राकृतिक खेती के अधीन– 5 बीघा
बागीचे की ऊंचाई– 2,389 मीटर
सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, रेड रिचर्ड, रेड गोल्डन, गोल्डन, जैरोमाइन
अन्य फसलें– राजमाह, मटर, टमाटर, शिमला मिर्च, सरसों, धनिया, गोभी, मक्की, जौ
रसायनिक खेती – व्यय – 50,000 आय– 1,20,000
प्राकृतिक खेती – यय – 10,000 आय– 1,60,000

सेब की सेल्फ लाइफ हुई दोगुनी, समय से पहले उगा कद्दू

रामसेन राही
मो.-94188-55389

प्राकृतिक खेती से सेब की सेल्फ लाइफ दोगुनी हो गई है। पहले जो सेब 4 से 5 महीने टिकता था अब वह 8 से 9 महीने टिकता है। फल की गुणवत्ता और स्वाद में रत्तीभर भी अंतर नहीं आता है। यह कहना है लिप्पा गांव के बागवान रामसेन राही का जो 2018 से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। जैविक खेती को छोड़ प्राकृतिक खेती का दामन थामने वाले रामसेन वर्तमान में 11 बीघा भूमि पर इस विधि से विविध फसलें ले रहे हैं।

एक संस्था से जुड़े रामसेन ने 2006 में रसायनिक खेती को छोड़ दिया और खेत–बागीचे में पहाड़ी गाय के मूत्र, कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल शुरू कर दिया। उन्होंने बताया कि एक बार हरिद्वार में एक शिविर के दौरान उन्होंने सुभाष पालेकर का नाम सुना। शिविर के साथियों से ही उन्हें प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला। इसके बाद उन्होंने इस खेती के बारे में और जानकारी जुटाना शुरू किया।

2018 में प्राकृतिक खेती पर प्रशिक्षण शिविर का हिस्सा बनने के बाद उन्होंने वर्मी कंपोस्ट का इस्तेमाल छोड़ दिया और पहाड़ी गाय (स्थानीय तौर पर खलंग) के गोबर–मूत्र से जीवामृत, घनजीवामृत का प्रयोग करना आरंभ किया। पिछले 3 साल में इस विधि में पारंगत हो चुके रामसेन ने बताया कि प्राकृतिक खेती चमत्कारिक परिणाम देती है। इस साल मेरे घर के पास वाले बागीचे में जुलाई महीने में ही कद्दू उग गया जबकि साथी किसानों के यहां कद्दू की बेल पर फूल ही आया था।

रामसेन ने बताया कि सेब पर इस विधि के प्रयोग से पौधों की बढ़वार, पत्तों की सेहत और फलोत्पादन सबमें सुधार आया है। घर के पास 6 बीघा के बागीचे के अतिरिक्त दूसरे बागीचे में भी वह प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। दोनों बागीचों में वह 20 दिन के अंतराल पर जीवामृत डालते हैं। पौधों में जिंक की कमी न हो इसके

> *रसायनिक खेती खेत और पेट दोनों के लिए खराब है। रसायनों से जहां खेत-बागीचे की उर्वरा शक्ति क्षीण हो जाती है वहीं इसे खाने पर तरह-तरह की बीमारियां हमें घेर लेती हैं। अच्छी सेहत के लिए हमें रसायनिक तरीके से तैयार फल सब्जी को छोड़ प्राकृतिक उत्पादों की तरफ मुड़ना ही होगा।*

लिए वह जंगल की सूखी कंडी का भी प्रयोग करते हैं।

रसायनिक खेती से इस विधि की तुलना करते हुए रामसेन ने बताया कि रसायनिक खेती में उत्पादन एकदम से गिरता है और जमीन भी धीर–धीरे बंजर होती जाती है। वहीं प्राकृतिक खेती में उत्पादन और उर्वरा शक्ति समय के साथ बढ़ती जाती है। इस साल उन्होंने 200 पेटी सेब की पैदावार ली है। सहफसल के तौर पर 2.5 क्विंटल राजमाह और 9 क्विंटल मटर की पैदावार ली है। इसके अतिरिक्त 1.5 क्विंटल आलू व शलगम भी उन्होंने प्राकृतिक विधि से उगाया है। वह कहते हैं कि मानव, जमीन और पर्यावरण की सेहत को अच्छा करने के लिए प्राकृतिक खेती को अपनाना जरूरी है।

<u>विस्तृत विवरण</u>

कुल जमीन– 20 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 11 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 3,126 मीटर

सेब की किस्में– रॉयल डिलिशियस, रेड गोल्डन, रेड रिचर्ड

अन्य फसलें– राजमाह, मटर, आलू, शलगम, कद्दू

रासायनिक खेती – व्यय – 60,000 आय– 4,50,000

प्राकृतिक खेती – व्यय – 6,000 आय– 5,00,000

धैर्य और विश्वास से मिलते हैं अच्छे परिणाम

हितेंदर मोहन
मो- 94181-10917

प्राकृतिक खेती विधि को पूरी तरह न अपनाओ तो परिणाम नहीं मिलते। यह कहना है कल्पा विकास खण्ड के बागवान हितेंदर मोहन का जो दो दशक से बागवानी कर रहे हैं। हितेंदर मोहन ने बताया कि उन्होंने 2019 में पालेकर जी से नौणी विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया। घर आकर उन्होंने अपनी जर्सी गाय के गोबर–मूत्र से आदान बनाकर पूरे बागीचे में इस्तेमाल शुरू कर दिया लेकिन सही नतीजे नहीं मिले। इसके बाद उन्होंने साहीवाल नस्ल की गाय खरीदी जिसके गोबर–मूत्र से बने आदानों से बागवानी में अच्छे परिणाम देखने को मिले।

खेती–बागवानी को आजीविका का जरिया बनाने वाले हितेंदर ने बताया कि पिछले कुछ सालों में रसायनों का प्रयोग बढ़ा है लेकिन उसके अनुपात में सेब और अन्य फसलों की पैदावार कम हुई है। रसायनों के प्रयोग से बीमारियां भी पहले की तुलना में बढ़ी हैं। जिससे बागवानों को हर साल ज्यादा रसायनों का छिड़काव करना पड़ता है। 2018 तक वह भी रसायनों का छिड़काव कर रहे थे लेकिन उन्होंने मौजूदा परिस्थिति को बदलने की ठानी और प्राकृतिक खेती की ओर मुड़े।

पिछले 3 साल से प्राकृतिक खेती कर रहे हितेंदर 4 बीघा भूमि पर सेब के 300 पौधों के साथ बाकि 2 बीघा पर कुठ, फाफड़ा, आलू और मटर पर प्राकृतिक विधि का प्रयोग कर रहे हैं। मुख्य फसल सेब पर उन्हें बेहतरीन नतीजे मिले हैं और वह हर साल औसतन 700 पेटी सेब का उत्पादन कर रहे हैं। सह फसल के तौर पर राजमाह की फसल भी उनकी आय में वृद्धि कर रही है। हितेंदर मूरंग में प्राकृतिक खेती कर रहे बागवानों के समूह से भी जुड़े हैं। इस समूह के जरिए उन्होंने अपने सेब को टेस्टिंग के लिए गुड़गांव भेजा था जिसमें उनका सेब पूर्णतया रसायनमुक्त पाया गया है। इससे उनका उत्साह बढ़ा है और इस साल उन्होंने 140 रूपए प्रति किलो की दर से महाराष्ट्र की कंपनी को बेचा है।

> *प्राकृतिक खेती में धैर्य और विश्वास से ही परिणाम मिलते हैं। अगर बागवान यह समझे कि मुझे जल्द ही से अच्छे नतीजे मिलेंगे तो यह गलत है। इस विधि को पूरी तरह अपनाना होगा और थोड़ा धैर्य भी रखना होगा तभी अच्छे परिणाम मिलेंगे।*

हितेंदर ने कहा कि अभी प्राकृतिक खेती से उगाए सेब व अन्य फसलों की मार्केटिंग को लेकर समस्या है। बाहरी राज्यों में पूरा उत्पाद नहीं बिकता और स्थानीय बाजार में रासायनिक और प्राकृतिक दोनों तरफ से फसलों के एक जैसे दाम ही मिल रहे हैं। मगर जिस तरह से किसान प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए आगे आ रहे हैं उसे देखकर लगता है कि प्राकृतिक उत्पाद की अधिकता होने से मार्केटिंग की समस्या भी जल्दी ही हल हो जाएगी।

प्राकृतिक खेती को आगे बढ़ाने की दिशा में हितेंदर अभी अपना योगदान दे रहे हैं वह अपने आसपास के बागवानों के बीच इस विधि को प्रचारित कर रहे हैं। इनके मार्गदर्शन में 8–9 बागवान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं जिन्हें वे जरूरी सलाह के साथ आदान भी निशुल्क दे रहे हैं।

<u>विस्तृत विवरण</u>

कल जमीन– 24 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 6 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 2,395 मीटर

सेब की किस्में– गोल्डन, सुपरचीफ, रेड डिलिशियस

अन्य फसलें– कुठ, फाफड़ा, आलू, मटर

रसायनिक खेती – व्यय– 50,000 आय– 4,50,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 15,000 आय– 4,85,000

कृषि-ऋषि के शिविर ने तोड़ा रसायनों का मिथक

चेत राम
मो.- 82199-58655

90 के दशक में किन्नौर जिला में सेब उत्पादन को लेकर जागरूकता आई। निचार विकास खण्ड के चेत राम क्षेत्र के पहले बागवानों में से एक थे जिन्होंने सेब लगाया। लगभग 20 साल तक सेब में रसायनों के प्रयोग, फसल के उतार चढ़ाव, बढ़ती बीमारियों, गिरती गुणवत्ता और बेतहाशा बढ़ती लागत से चिंतित चेत राम को बागवानी घाटे का सौदा लगने लगी। खेती–बागवानी में नवाचार को अपनाने वाले चेत राम को जब प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला तो वह अपने खर्च पर कुफरी पहुंचे और 6 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में इस विधि की बारीकियां सीखीं।

चेत राम ने बताया कि इस शिविर ने उनकी आंखें खोल दी। वर्षों तक अच्छे उत्पादन के लिए रसायनों के इस्तेमाल का उनके मन में घर कर गया मिथक इस शिविर में टूटा और घर आकर उन्होंने पालेकर जी के बताए अनुसार आदान बनाना शुरू कर दिया। 2 बीघा क्षेत्र में सेब के 40 पौधों पर उन्होंने पहाड़ी गाय के गोबर–मूत्र और स्थानीय वनस्पतियों से बने आदानों का प्रयोग शुरू कर दिया। इस पर सकारात्मक परिणाम मिलने पर उन्होंने घर के साथ लगे बागीचे को पूरी तरह प्राकृतिक खेती में परिवर्तित कर दिया। अभी वह सेब के 200 और नाशपाती के 40 पौधों पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

3 साल का अनुभव रखने वाले चेत राम ने इस विधि की तुलना भी की है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती में सेब के पौधों की बढ़वार ज्यादा है, पौधे ताकतवर हैं और मौसमी मार भी अच्छे से झेल लेते हैं। वहीं रसायनिक खेती में पौधे कमजोर रहते हैं और विपरीत परिस्थितियों में बागवानों को नुकसान उठाना पड़ता है। रसायनिक खेती में बढ़ती लागत और फसल का उतार–चढ़ाव भी बागवानों को नुकसान देता है। मगर प्राकृतिक खेती में परिस्थितियां इसके विपरीत हैं। इस साल उन्होंने 3 क्विंटल राजमाह, 15 क्विंटल आलू के साथ 250 पेटी नाशपाती की पैदावार ली है।

चेत रात ने बागीचे के साथ घर की क्यारी में भी सब्जियों और सेब की नर्सरी पर प्राकृतिक विधि को अपनाया है। उन्होंने बताया कि वह साल 2000 से नर्सरी लगा रहे हैं और अभी तक लोगों को 50 से 60 हजार पौधे दे चुके हैं। रसायनिक खेती के दौरान कई बार बीमारी आने से नर्सरी में काफी पौधे मर जाते थे लेकिन इस विधि से पौधों के मरने की दर कम हुई है। अगर कोई बीमारी भी आती है तो वह एक या दो पौधों तक ही

सीमित रहती है।

चेत राम प्राकृतिक खेती के प्रसार में भी जुटे हैं। वह विभाग के अधिकारियों के साथ प्रशिक्षण शिविरों में जाकर अपने अनुभव साझा करते हैं और किसान–बागवानों को अपने बागीचे में आने का निमंत्रण भी देते हैं। वह कहते हैं कि प्रत्यक्ष तौर पर परिणाम देखकर बागवान स्वतः ही इस विधि की तरफ मुड़ जाते हैं।

"मिट्टी और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना प्राकृतिक खेती कम लागत में लगातार उपज बढ़ाती है। बागवानों को छोटे भूखंड में ही सही पर एक बार इसे अपनाकर जरूर देखना चाहिए।"

विस्तृत विवरण

कुल जमीन– 30 बीघा

प्राकृतिक खेती के अधीन– 6 बीघा

बागीचे की ऊंचाई– 2086 मीटर

सेब की किस्में– सुपरचीफ, स्कारलेट–2, जैरोमाइन, रेड विलॉक्स, गेल गाला, ग्रेनी स्मिथ

अन्य फसलें– राजमाह, चौलाई, बाथू, आलू, गोभी, नाशपाती, टमाटर

रसायनिक खेती – व्यय– 75,000 आय– 2,00,000

प्राकृतिक खेती – व्यय– 15,000 आय– 1,75,000

प्राकृतिक खेती अपना कर आय को बढ़ाएं किसान : चारस

किन्नौर में 545 किसान जुड़े जीरो बजट

कोठी में बताई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

रिकांगपिओ : आत्मा परियोजना कृषि विभाग किन्नौर की ओर से राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कोठी में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती को लेकर एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इसमें स्कूल के विद्यार्थियों सहित शिक्षकों ने भाग लिया। प्रोजेक्ट निदेशक (आत्मा) किन्नौर सोमराज ने बताया कि शिविर में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से संबंधित जानकारी दी गई। इस खेती से पर्यावरण को होने वाले फायदे भी बताए गए। विद्यार्थियों को भी जीवामृत बनाने की विधि बताई गई। इस दौरान प्रधानाचार्य राम सिंह, कल्पा ब्लाक के बीटीएम सुधाकर व एटीएम मुनीश नेगी उपस्थित थे। संस

मूरंग के जीत नेगी प्राकृतिक खेती से कर रहे अच्छी कमाई

दो बीघा जमीन पर लगाए हैं सेब के 2200 पौधे, 350 रुपये प्रति किलोग्राम बिका सेब, सुभाष पालेकर खेती के जमीनी स्तर पर परिणाम आने शुरू

मुंबई और दिल्ली सहित अन्य महानगरों में बेच रहे सेब

बागवान जीत नेगी

किन्नौर के किसानों को बताई प्राकृतिक खेती

मुख्यमंत्री ने वैबिनार के माध्यम से किया जागरूक

थेमगारंग में किसानों को दी प्राकृतिक खेती बारे जानकारी

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पर दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

प्राकृतिक खेती अपनाकर फसलों को बचाएं किसान-बागवान

किसान योजना के लिए 57 लाख का प्रावधान

रिकांगपिओ में जिला स्तरीय किसान सलाहकार समिति की हुई बैठक

खाद्य वस्तुओं के लिए सतत खाद्य प्रणाली बनाने पर अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ चर्चा

आज समाज नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक तरीके से उगाए जा रहे सभी प्रकार के खाद्यान्नों, डेयरी उत्पादों, मीट उत्पादों और औषधीय पौधों को बढ़ावा देकर उन्हें बाजार मुहैया करवाने और उनके विपणन के लिए एक एकीकृत सतत खाद्य प्रणाली बनाने की दिशा में प्रयास किए जा रहे हैं।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत तैयार की जा रही सतत खाद्य प्रणाली को लेकर मंगलवार को राज्य सचिवालय में कृषि सचिव डॉ. अजय शर्मा की अध्यक्षता में अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की गई। बैठक में अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं जीआईजेड और केएफडब्ल्यू डेवलपमेंट बैंक के अधिकारियों से इस नई खाद्य प्रणाली को तैयार करने की तैयारियों और भविष्य में किए जाने वाले कार्यों के बारे में चर्चा की गई।

बैठक में कृषि सचिव ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में कृषि, बागवानी, वन, पशुपालन, आयुर्वेद, मार्केटिंग बोर्ड और मिल्कफेड विभागों के साथ मिलकर एक ऐसी खाद्य प्रणाली को विकसित करने का काम किया जा रहा है। जिसमें सभी तरह के खाद्य पदार्थों को शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस खाद्य प्रणाली में प्राकृतिक तरीके से पैदा किए जा रहे उत्पादों की पहचान कर उनके लिए उपयुक्त बाजार की तलाश की जाएगी। इसके बाद इन सभी तरह के उत्पादों के विपणन का प्रबंध किया जाएगा। साथ ही इस प्रणाली में उत्पाद से जुड़े किसान और उत्पादकों को उचित मूल्य उपलब्ध करवाया जाएगा, ताकि वे इससे जुड़े रहें।

बैठक के दौरान जीआईजेड इंडिया के नेचरल रिसोर्स मैनेजमेंट और एग्रोइकोलॉजी के निदेशक राजीव आहल ने हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से शुरू की गई प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के सफलतापूर्वक संचालन पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत न सिर्फ किसानों का लाभ हो रहा है, बल्कि इससे पर्यावरण, कृषि पारिस्थितिकी और जल और ऊर्जा संरक्षण भी हो रहा है।

'सरकार करेगी प्राकृतिक उत्पादों के उचित विपणन को प्रभावकारी प्रणाली विकसित'

मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने उचित मांग और विपणन के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने पर बल दिया

शिमला, 15 दिसम्बर (ब्यूरो): प्राकृतिक उत्पादों का उचित विपणन और प्रमाणन सुनिश्चित करने के लिए एक प्रभावकारी प्रणाली विकसित की जाएगी ताकि किसानों को उनके उत्पादों के बेहतर मूल्य मिल सकें। यह बात मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने मंगलवार को प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश में सतत खाद्य प्रणाली तंत्र की एक उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। जयराम ठाकुर ने कहा कि प्राकृतिक उत्पादों की उचित मांग और विपणन के लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिएं। उन्होंने कहा कि इससे प्राकृतिक उत्पादों की मांग बढ़ेगी और किसान प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए प्रेरित होंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुना करने के लिए कृतसंकल्प हैं और प्राकृतिक खेती से इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने अपने पहले ही बजट में 25 करोड़ रुपए का प्रावधान किया था। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से राज्य के युवाओं के लिए कृषि एक लाभप्रद व्यवसाय बना है, जो इससे पूर्व बेहतर रोजगार अवसर और आजीविका के लिए प्रदेश से बाहर जा रहे थे। उन्होंने कहा कि पहले उत्पादन में कमी होने

शिमला : प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत हिमाचल प्रदेश में सतत खाद्य प्रणाली तंत्र की उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित करते मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर। (छाया)

प्राकृतिक खेती वातावरण के लिए बेहतर : कंवर

कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर ने कहा कि प्राकृतिक खेती द्वारा जहां एक तरफ किसानों के लिए बेहतर कीमत सुनिश्चित हुई है, वहीं यह स्वास्थ्य और वातावरण के लिए बहुत अच्छी साबित हुई है। मुख्य सचिव अनिल खाची ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार किसानों की समस्याओं को समझा जब उन्होंने उनकी आय को 2022 तक दोगुना करने की परिकल्पना की।

के डर से प्रदेश के किसान प्राकृतिक खेती को अपनाने के इच्छुक नहीं थे लेकिन अब राज्य के किसान प्राकृतिक खेती अपनाने में गहरी रुचि दिखा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संभालने में कृषि क्षेत्र ने अहम भूमिका निभाई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने एफ.ए.ओ. आई.एन.आर.ए.ई. पर एनेबलिंग सस्टेनेबल फूड सिस्टम नामक किताब का विमोचन किया। मुख्य सचिव अनिल खाची, अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि निशा सिंह, एफ.ए.ओ. के भारत में प्रतिनिधि टोमियो सचिचली, परियोजना निदेशक राकेश कंवर, मिल्कफैड के अध्यक्ष निहाल सिंह शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव जे.सी. शर्मा, ग्रामीण विकास सचिव संदीप भटनागर, विशेष सचिव राजेश्वर चंदेल, निदेशक कृषि डा. नरेश कुमार बंधन, निदेशक बागवानी डा. जे.पी. शर्मा, निदेशक पशुपालन डा. अजमेर डोगरा, राज्य कृषि विपणन बोर्ड के प्रबंध निदेशक नरेश शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

फ्रांस - जर्मनी से बैठक को किया संबोधित

फ्रांस के कृषि, खाद्य और पर्यावरण के राष्ट्रीय शोध संस्थान, विषय प्रयोगशाला विज्ञान, व्यवहार एवं समाज के उप निदेशक डॉ. आलिसन लोकोंटो ने फ्रांस से बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि प्राकृतिक खेती न केवल पर्यावरण के लिए बेहतर है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए स्थानीय स्तर पर बेहतर समन्वय सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। आई.एफ.ओ.ए.एम. ऑर्गेनिक्स अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय जर्मनी गाबोर फिगेस्की के वरिष्ठ प्रबंधक गंगेश्वर रहिलसी ने भी जर्मनी से ऑनलाइन माध्यम से सस्टेनेबल फूड सिस्टम विषय पर विशिष्ट टिप्पणियां दीं।

सस्टेनेबल फूड सिस्टम मैकेनिज्म पर दी प्रस्तुति

ग्राम दिशा ट्रस्ट के संस्थापक ट्रस्टी और प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के पूर्व सलाहकार आशीष गुप्ता ने इस अवसर पर सस्टेनेबल फूड सिस्टम मैकेनिज्म पर प्रस्तुति दी। एवरेस्ट लाइवलिहुड कन्सल्टिंग इंडिया लिमिटेड हैदराबाद के कार्यकारी निदेशक जी.वी. कृष्णा गोपाल ने इस अवसर पर प्रस्तुति दी।

जिला आतमा अधिकारी

डा0 सोम राज नेगी
जिला परियोजना उपनिदेशक-। (आतमा)

मेरे अब तक के विभागीय कार्यकाल के दौरान यह पहली बार है जब मैंने किसानों–बागवानों की किसी खेती विधि के प्रति इतनी जिज्ञासा और उत्सुक्ता देखी है। यह दर्शाता है कि किसान इस विधि को अपनाने हेतू पूर्णतया तैयार है। प्राकृतिक खेती को अपनाने से मिल रहा अच्छा उत्पादन, गुणवत्ता तथा कृषि लागत में आ रही कमी किसानों–बागवानों को इसके प्रति आकर्षित कर रही है। मुझे आशा है कि हम जल्द ही जिला के सभी किसानों को इस विधि से जोड़ने में सक्षम होंगे।

डा0 बलवीर सिंह ठाकुर
जिला परियोजना उपनिदेशक-।। (आतमा)

कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाले इस जिला में जिस उत्साह से किसान–बागवान प्राकृतिक खेती अपना रहे हैं वह अद्वितीय है। इस विधि के प्रति किसानों का प्यार और विश्वास हमें भी उर्जावान बना रहा है। हमारी पूरी टीम इस क्षेत्र को रसायनमुक्त कर प्राकृतिक खेती में अग्रणी बनाने हेतू लगन और मेहनत से काम कर रही है ताकि किसान–बागवानों का दीर्घकालिक कल्याण सुनिश्चित हो सके।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

पूह

जय नेगी (बीटीएम)

सुधाकर नेगी (एटीएम)

चेत राम (एटीएम)

कल्पा

अरूण किशोर (बीटीएम)

गुलशन कुमार (एटीएम)

सौरभ वालिया (एटीएम)

निचार

यशी लामो (बीटीएम)

मुनीष नेगी (एटीएम)

करण शर्मा (एटीएम)

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम (8.4 µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम (112 µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज किया गया। अत: **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

Comparative Economics of SPNF and CF Apple in HP (Rs/ha)

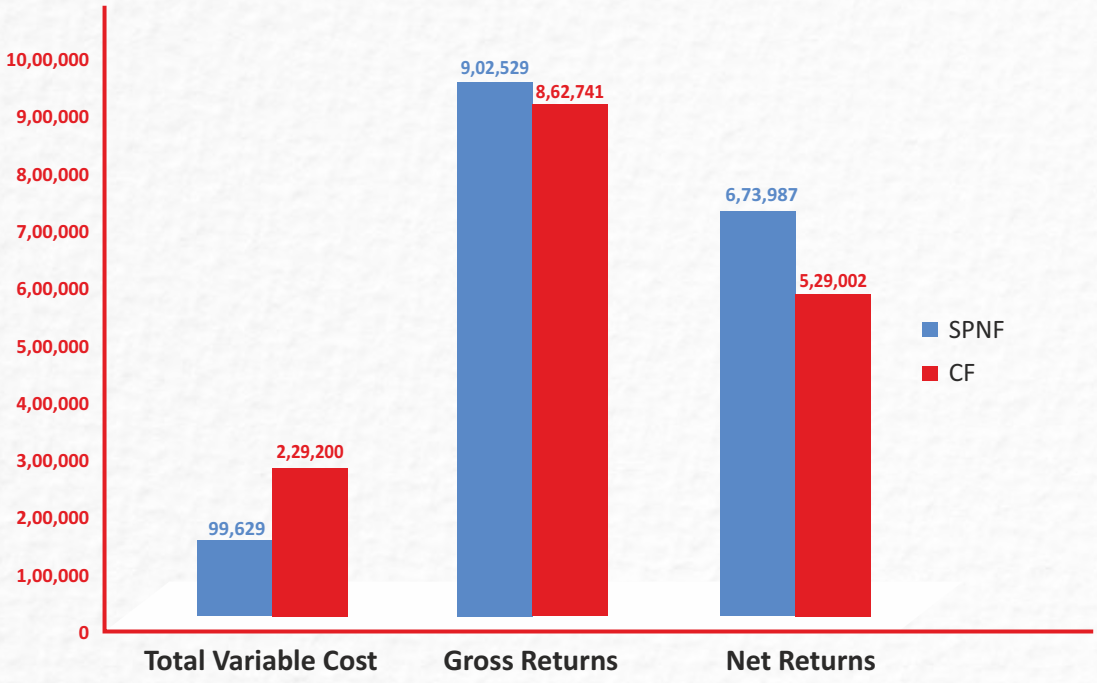

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में प्राकृतिक खेती से गैर – प्राकृतिक खेती की तुलना में बागवानी लागत में कमी दर्ज की गई है। प्राकृतिक खेती पद्धति से बागवानों का शुद्ध लाभ बढ़ा है।

Comparative disease incidence in SPNF & CF Apple in Shimla, Sirmour District during 2020

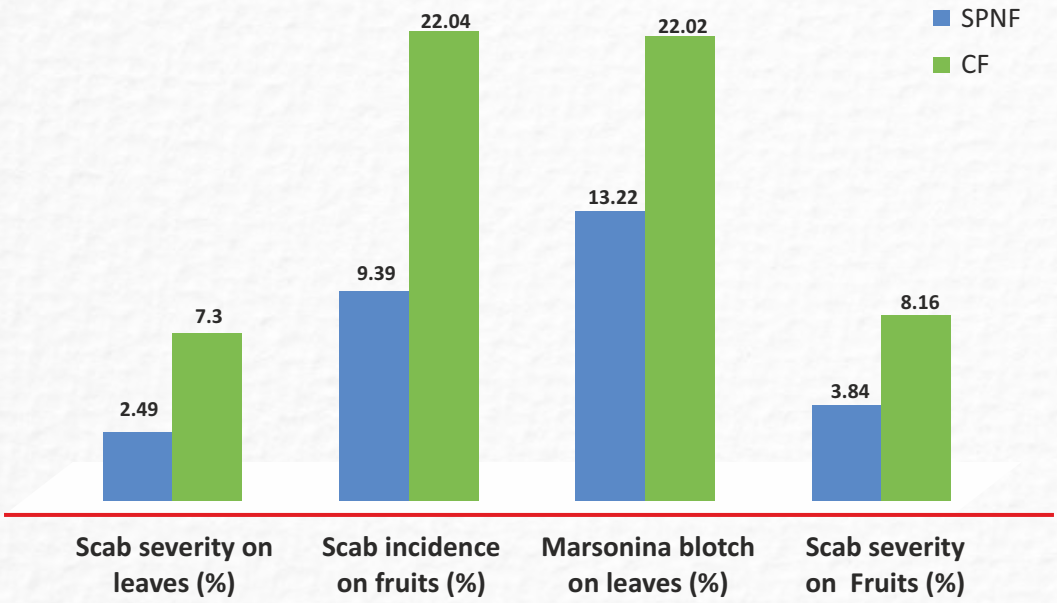

* अभी तक किए गए विभागीय तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि प्राकृतिक खेती बागीचों में गैर – प्राकृतिक खेती बागीचों की अपेक्षा सेब पपड़ी रोग (Scab) और आकस्मिक पतझड़ रोग (Premature Leaf Fall) का प्रकोप कम दर्ज किया गया है।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डा. सोम राज नेगी	जिला परियोजना उपनिदेशक – I	98160 & 40679	24	73
2	डा. बलवीर सिंह ठाकुर	जिला परियोजना उपनिदेशक – II	94180-& 83194	49	

खण्ड – स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
पूह	जय नेगी	बीटीएम	89881 - 07009	10	27
	अरूण किशोर	एटीएम	94595 - 50305	9	
	यशी लामो	एटीएम	88946 - 45583	8	
कल्पा	सुधाकर नेगी	बीटीएम	89880 - 78692	8	24
	गुलशन कुमार	एटीएम	88948 - 71652	8	
	मुनीष नेगी	एटीएम	70180 - 05573	8	
निचार	चेत राम	बीटीएम	98575 - 04570	8	22
	सौरभ वालिया	एटीएम	98164 - 73069	7	
	करण शर्मा	एटीएम	82199 - 98019	7	

facebook.com/SPNFHP
twitter.com/spnfhp
youtube.com/SPNFHP

Himachal Pradesh

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. | दूरभाषः 0177 2830767
ईमेलः spnf-hp@gov.in

Designed by : Tinge Media PR Pvt. Ltd. +91-981 682 9937